



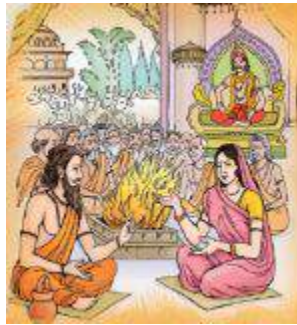
# वैदिक कालीन नारियाँ

## गार्गी

प्राचीन काल से ही हमारे देश में ऐसी महान नारियाँ जन्म लेती रही हैं जिन्होंने ज्ञान-विज्ञान, त्याग-तपस्या, साहस और बलिदान के अतुलनीय उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। जिन्होंने अपने ज्ञान से यह बता दिया कि अगर बालिकाओं को शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाएँ तो वे पुरुषों से किसी भी प्रकार कम नहीं साबित होंगी।

वैदिक काल में ऐसी ही एक ज्ञानवती महिला हुई हैं- गार्गी। गर्ग गोत्र में जन्म लेने के कारण इन्हें गार्गी कहा जाता था। गार्गी अत्यंत शिक्षित, विदुषी महिला थीं।

एक बार राजा जनक ने यज्ञ किया। उसमें देशभर के प्रकाण्ड विद्वान उपस्थित हुए। राजा जनक के मन में यह इच्छा जाग्रत हुई कि जो विद्वान यहाँ आए हैं, पता लगाया जाय इनमें सर्वश्रेष्ठ विद्वान कौन है ?



इसके लिए उन्होंने अपनी गौशाला की एक हजार गायों के सींगों में दस-दस तोला सोना बाँधवा दिया और घोषणा की कि जो सर्वश्रेष्ठ विद्वान हो वह इन सब गायों को ले जाए। सभी विद्वान घबरा गए क्योंकि गायें ले जाने का अर्थ था स्वयं को सर्वश्रेष्ठ विद्वान साबित करना। जब कोई भी गायें लेने आगे नहीं बढ़ा तो याज्ञवल्क्य ने अपने शिष्यों से कहा, ”उठो और गायों को ले चलो।” शिष्य गायों को बाँध कर ले जाने लगे। इस पर विद्वानों को क्रोध आ गया। उन्होंने बिगड़कर याज्ञवल्क्य से पूछा, ”क्या तुम इतनी बड़ी सभा में स्वयं को सबसे बड़ा विद्वान समझते हो?” याज्ञवल्क्य ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया, ”यह बात नहीं है। यहाँ उपस्थित सभी विद्वानों को मैं प्रणाम करता हूँ। मैं गायें इसलिए ले जा रहा हूँ, क्योंकि मुझे इनकी आवश्यकता है।”

फिर क्या था, सभी विद्वान चिल्ला उठे, ”हमसे शास्त्रार्थ करो।” याज्ञवल्क्य इस बात पर सहमत हो गए और विनम्रतापूर्वक सभी विद्वानों के प्रश्नों का उत्तर देने लगे। धीरे-धीरे सभी विद्वान प्रश्न पूछ कर चुप हो गए। अंत में गार्गी ने कहा, ”राजन! आज्ञा हो तो मैं भी प्रश्न करूँ।” राजा जनक ने आज्ञा दे दी। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से प्रश्न पूछना प्रारम्भ कर दिया। गार्गी के प्रश्न अत्यंत पौने तथा गहन अध्ययन पर आधारित थे। प्रश्नों को सुनकर विद्वतमण्डली मन ही मन गार्गी के ज्ञान की सराहना करने लगी। अंततः एक प्रश्न ऐसा आया जिस पर याज्ञवल्क्य रुक गए और उत्तर न दे सके किंतु गार्गी अत्यंत बुद्धिमती थीं। वह नहीं चाहती थीं कि किसी विद्वान का अपमान हो और वह भी याज्ञवल्क्य जैसे परम विद्वान का। वह चुप हो गईं और भरी सभा में कहा, “इस सभा में याज्ञवल्क्य से बड़ा कोई विद्वान नहीं है। इन्हें कोई नहीं हरा सकता।” सारी सभा गार्गी की विद्वता और उदारता की मुक्त कंठ से प्रशंसा करने लगी। ज्ञान और उदारता की ऐसी बेजोड़ प्रतिभाएँ निश्चय ही हमारे देश का गौरव हैं।

### अपाला

महर्षि अत्रि की पुत्री अपाला अद्वितीय सुंदरी और बुद्धिमती थीं। एक बार प्रभात काल में स्नान करते समय उसकी दृष्टि अपने पैर पर गयी जहाँ छोटे-छोटे सफेद दाग दिखायी दे रहे थे। अपाला उन दागों को देखकर चकित और चिन्तित हो उठी तभी से अपाला स्नान के समय प्रतिदिन उन दागों को ध्यान से देखती थीं और विस्मय में पड़ जाती थीं क्योंकि दाग धीरे-धीरे बढ़ते हुए चकत्ते का रूप धारण कर रहे थे। उन्होंने यह आसानी से समझ लिया कि ये साधारण दाग नहीं हैं, श्वेत दाग हैं। अपाला ने कई बार सोचा कि वह उन दागों की चर्चा अपने पिता से कर दें, किंतु वह ऐसा न कर सकीं। वह उन दागों को हमेशा छिपाए रहती थीं और इसके बारे में किसी को नहीं बताती थीं।

अपाला जब विवाह के योग्य हुई तो अत्रि को उसके विवाह की चिन्ता हुई। संयोगवश वेदों के ज्ञाता विद्वान कृशाश्व ने अतिथि के रूप में अत्रि के आश्रम में प्रवेश किया। अपाला ने अतिथि कृशाश्व के खान-पान का उचित प्रबन्ध किया। अपाला के सौन्दर्य और व्यवहार कुशलता से मुग्ध होकर कृशाश्व ने अपाला के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की।

महर्षि अत्रि ने प्रसन्नतापूर्वक अपाला का हाथ कृशाश्व के हाथ में दे दिया। विवाहोपरान्त अपाला कृशाश्व के साथ उनके आश्रम में चली गईं।

दिन बीतने के साथ ही अपाला के शरीर के सफेद चकत्ते भी बढ़ने लगे। अपाला बड़ी चतुराई से उन्हें कृशाश्व से भी छिपाए रहती थीं। एक दिन कृशाश्व की दृष्टि उन सफेद चकत्तों पर जा पड़ी। तभी से वह अपाला को उपेक्षा व तिरस्कार की दृष्टि से देखने लगे। अपाला को यह समझते देर न लगी कि उनके पति उनको अपने साथ नहीं रखना चाहते हैं।

पति से अपमानित होकर अपाला अपने पिता के आश्रम में पुनः चली गईं। उन्होंने रूंधे हुये कंठ से सभी बातें अपने पिता को बता दीं और कहा कि उन चकत्तों के कारण उनके पति ने अपमानित कर अपने आश्रम से बाहर कर दिया।

इससे अत्रि बहुत दुःखी हुए। उन्होंने अपाला को सान्त्वना देते हुए कहा, “चिन्ता की कोई बात नहीं पुत्री! श्वेत दाग के कारण तुम्हारे पति ने आश्रम से निकाल दिया है किंतु पिता की गोद पहले की तरह तुम्हारे लिए खाली है। तुम पहले की तरह मेरे आश्रम में ही नहीं मेरी गोद में रहो और इस रोग के निदान के लिये पुरुषार्थ करो। इसके लिए तुम्हें इन्द्र की उपासना करनी होगी।”

पिता से प्रेरित होकर अपाला इन्द्र की उपासना में लग गईं। वह नित्य प्रेमपूर्वक मंत्रों का जाप करती और सत्तू तथा सोमरस का नैवेद्य चढ़ाया करती थीं। धीरे-धीरे कई माह व्यतीत हो गए। एक दिन सत्तू अर्पित करने के बाद जब सोमरस की बारी आई तो सोमलता को पीसने के लिये कोई पत्थर नहीं था। उन्होंने सोमलता को अपने दाँतों से पीस कर धरती पर गिरते हुए सोमरस का पान करने के लिये 'प्रभु' से प्रार्थना की।

अपाला के प्रेम और उसकी भक्ति पर इन्द्र गद्गद हो उठे। उन्होंने प्रकट रूप में सत्तू और सोमरस का पान करते हुए कहा, “अपाले! तुम धन्य हो, तुम्हारा रोग दूर हो जाएगा और तुम्हारे प्रेम और भक्ति की कहानी भी अमर हो जाएगी।”

इन्द्र के वरदान से अपाला रोग मुक्त हो गई। उनका शरीर स्वर्ण की तरह चमकने लगा। वह प्रेम और निष्ठा के फलस्वरूप अमर हो गई।

### अभ्यास

1. राजा जनक ने क्या घोषणा की ?
2. गार्गी ने याज्ञवल्क्य की विद्वता के बारे में सभा को क्या बताया ?
3. अपाला किस बात से चिंतित हो उठी?
4. अपाला रोग मुक्त किस प्रकार हुईं ?
5. सही विकल्प चुनिए

**क.** याज्ञवल्क्य द्वारा प्रश्न का उत्तर न दिए जाने पर गार्गी चुप हो गई क्योंकि-

- उन्हें बड़ा क्रोध आ रहा था।
- सभा के विद्वान हँसेंगे।
- वह नहीं चाहती थीं कि याज्ञवल्क्य जैसे परम विद्वान का अपमान हो।

**ख.** बालिकाएँ हर क्षेत्र में स्वयं को साबित कर सकती हैं, अगर-

- उन्हें बाहर निकलने से मना किया जाए।
- निरक्षर रखा जाए।
- शिक्षा और समानता के अवसर प्रदान किए जाएँ।

### योग्यता विस्तार-

- अपने पुस्तकालय से अन्य महान नारियों के विषय में पुस्तक लेकर पढ़िए।
- हमें किसी रोगग्रस्त व्यक्ति के प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिए? अपने विचार लिखिए।